❋ 6 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] स्कॉलरशिप लेनी है तो सब चीज़ों से ममत्व निकाल दो। धन, बच्चे, घर आदि कुछ भी याद न आये। शिवबाबा ही याद हो, पूरा स्वाहा, तब ऊंच पद की प्राप्ति होगी। बुद्धि में यह नशा रहना चाहिए कि हम कितना बड़ा इम्तहान पास करते हैं।

2] ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को पतित-पावन थोड़ेही कहेंगे। लक्ष्मी-नारायण को कहेंगे? नहीं। पतित-पावन तो है ही एक। सारी दुनिया को पावन बनाने वाला है ही एक। वह तुम्हारा बाप है।

3] तुम समझते हो बाबा बड़े जोर से नशा चढ़ाते हैं। तुम्हारे जितना बड़ा आदमी कोई बन न सकें, तुम मनुष्य से देवता बन जाते हो। विश्व का मालिक तुम्हारे सिवाए और कोई बना है क्या? किश्चियन लोगों ने कोशिश की वर्ल्ड के मालिक बनें, परन्तु लॉ नहीं कहता जो तुम्हारे सिवाए विश्व का मालिक कोई बनें। बनाने वाला बाप ही चाहिए और कोई की ताकत नहीं।

4] बाप कहते हैं कि तुम्हारे हाथ में जो धन, बच्चे, शरीर आदि है, सबसे ममत्व निकालना है। साहूकार तो धन के पिछाड़ी मरते हैं। मुट्ठी में पैसे हैं, वह छूटते नहीं। रावण की जेल में पड़े रहेंगे। कोटों में कोई निकलेंगे जो सब चीजों से ममत्व निकाल बन्दर से देवता बन जायेंगे। जो भी साहूकार लोग बड़े-बड़े लखपति हैं, मुट्ठी में पैसे पकड़े हुए हैं, उनकी पिछाड़ी प्राण हैं। सारा दिन महल, माड़ियां, बच्चे आदि ही याद आते रहेंगे। उनकी याद में ही मर जायेंगे। बाप कहते हैं पिछाड़ी में और कोई चीज़ याद न आये। सिर्फ मामेकम् याद करो तो जन्म जन्मान्तर के पाप नाश हो जायें। साहूकार के पैसे तो सब मिट्टी में मिल जाने हैं क्योंकि पाप के पैसे हैं ना। काम में नहीं आते।

5] बाप रचयिता है, पहले सूक्ष्मवतन का फिर स्थूल वतन का। ब्रह्मा देवता थोड़ेही है, विष्णु देवता है। तुमको साक्षात्कार होता है समझाने के लिए। प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ है ना। ब्रह्मा के साथ हैं ब्राह्मण सो फिर देवता बनने वाले हैं। देवतायें तो सजे हुए रहते हैं, इनको फरिश्ता कहा जाता है। फरिश्ता बनकर फिर आकर देवता पद पायेंगे। गर्भ महल में जन्म लेंगे। दुनिया बदलती रहती है। आगे चलकर तुम सब देखते रहेंगे। अच्छे मजबूत हो जायेंगे। बाकी थोड़ा समय है। तुम आये हो नर से नारायण बनने के लिए। फेल होते हैं तो प्रजा बन जाते हैं। सन्यासी आदि यह बातें समझा न सकें। राम की तो आबरू ही चट कर दी है। जबकि गाते हैं राम राजा.....। फिर वहाँ ऐसे अधर्म की बात हो कैसे सकती। यह सब भक्ति मार्ग की बातें है इसलिए गाया जाता है झूठी माया, झूठी काया..... माया 5 विकारों को कहा जाता है, न कि धन को। धन को सम्पत्ति कहा जाता है। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है कि माया किसको कहा जाता है। यह बाप मीठे-मीठे बच्चों को समझाते हैं।

6] देवतायें होते हैं सतयुग में, मनुष्य होते हैं कलियुग में। तुम अभी संगम पर बैठ मनुष्य से देवता बन रहे हो। कितना सहज बताते हैं। पवित्र जरूर बनना है, तो प्रजा भी बहुत बनानी है। कल्प-कल्प तुम इतनी प्रजा बनाते हो, जितनी सतयुग में थी। सतयुग था, अब नहीं है फिर होगा। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक होंगे।

7] बाप सब अच्छी रीति समझाते हैं। जो बच्चों को पूरी रीति धारण करना है और ईश्वरीय सेवा में लग जाना है। यह तो छी-छी दुनिया है, इनको **विषय वैतरणी नदी** कहा जाता है।

...2

❋ 6 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ योग-

1] मीठे बच्चे– याद के साथ-साथ पढ़ाई पर भी पूरा ध्यान देना है, याद से पावन बनेंगे और पढ़ाई से विश्व का मलिक बनेंगे।

2] बाप ने कहा है याद में रहो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। पतित-पावन तो एक ही बाप है।

❋ धारणा-

1] तो ऐसी ऊंच पढ़ाई पर अच्छी रीति ध्यान देना चाहिए। सिर्फ याद की यात्रा से काम नहीं चलेगा, पढ़ाई भी जरूरी है। 84 का चक्र कैसे लगता हैं, यह भी बुद्धि में फिरना चाहिए।

2] तुम बच्चों को बहुत अच्छा दिमाग होना चाहिए। ज्ञान अमृत हा डोज़ चढ़ाते रहते हैं। सिर्फ इस पर नहीं ठहरना है कि हम बाबा को बहुत याद करते हैं। याद से ही पावन हो जायेंगे परन्तु पद भी पाना है। पावन तो मोचरा खाकर भी सबको होना ही है। परन्तु बाप आये हैं विश्व का मालिक बनाने, जायेंगे तो सब शान्तिधाम में। जाकर सबको सिर्फ बैठ जाना है क्या? वह तो कोई काम के न रहे। काम के वह हैं जो फिर आकर स्वर्ग में राज्य करते हैं। तुम यहाँ आये ही हो स्वर्ग की बादशाही लेने। तुमको बादशाही थी, फिर माया ने छीन ली। अब फिर माया रावण पर जीत पानी है, विश्व का मालिक तुमको ही बनना है।

3] बाप कहते हैं हम गरीब निवाज़, गरीबों को साहूकार, साहूकारों को गरीब बना देंगे। यह दुनिया बदलनी होती है ना। कितना पैसे का नशा रहता है- हमको इतना धन माल है, एरोप्लेन हैं, मोटरे हैं, महल हैं.....! फिर कितना भी माथा मारें कि बाप को याद करें, परन्तु याद ठहरेगी नहीं। लॉ नहीं कहता है, कोटो में कोई ही निकलेंगे। बाकी तो पैसा ही याद करते रहेंगे।

4] बाप कहते हैं देह सहित जो कुछ देखते हो उन सबको भूल जाओ। इसमें ही अटक पड़े तो ऊंच पद पा नहीं सकोगे। बाबा पुरूषार्थ तो करायेंगे ना। तुम यहाँ आये नर से नारायण बनने। तो इसमें योग भी पूरा चाहिए। कोई भी चीज़, न धन, न बच्चे आदि कुछ भी याद आये, सिवाए एक शिवबाबा के, तब तुम ऊंच ते ऊंच स्कॉलरशिप ले सकते हो, ऊंच प्राइज़ पा सकते हो।

5] अभी तुमको क्या प्राइज़ मिलती है? तुम विश्व के मालिक बनते हो। **ऐसे नहीं, हम 5-6 घण्टा याद में रहते हैं तो बस यह लक्ष्मी-नारायण बन जायेंगे। नही, बड़ी मेहनत करनी है।** एक शिवबाबा की ही याद रहे और कुछ भी पिछाड़ी में याद न आये। तुम बहुत-बहुत बड़े देवता बन रहे हो।

6] बाप बैठ समझाते हैं– तुम अपने को इतना ऊंच नहीं समझते हो, जितना बाप तुमको ऊंच समझते हैं। तुम बच्चों को बहुत नशा रहना चाहिए क्योंकि तुम बहुत ऊंच कुल के हो।

7] समय प्रति समय कितनी आत्मायें दु:ख की लहर में आती हैं। प्रकृति की थोड़ी भी हलचल होती हैं, आपदायें आती हैं तो अनेक आत्मायें तड़पती हैं, मर्सी, रहम मांगती हैं। तो ऐसी आत्माओं की पुकार सुन रहम की भावना इमर्ज करो। पूज्य स्वरूप, मर्सीफुल को धारण करो। स्वयं को सम्पन्न बना लो तो यह दु:ख की दुनिया सम्पन्न हो जाए। अभी परिवर्तन के शुभ भावना की लहर तीव्रगति से फैलाओ तो तेरे मेरे की हलचल समाप्त हो जायेगी।

...3

❋ 6 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[3]

❋ सेवा-

1] तुमको लोग कहते हैं तुम ब्रह्मा को देवता मानते हो या भगवान् मानते हो? बोलो, हम तो कहते नहीं है कि ब्रह्मा भगवान् है। तुम आकर समझो। तुम्हारे पास अच्छे ते अच्छे चित्र हैं। त्रिमूर्ति, गोला और झाड़ का चित्र सबसे नम्बरवन है। शुरुआत के यही दो चित्र हैं, यही तुम्हारे बहुत काम में आने के हैं।

2] लक्ष्मी-नारायण का चित्र तुम विलायत में ले जाओ, उनसे तो ज्ञान उठा नहीं सकेंगे। सबसे मुख्य चित्र हैं– त्रिमूर्ति, गोला और झाड़ का। इसमें दिखाया गया है– कौन-कौन कब आते हैं, आदि सनातन देवी-देवता धर्म कब खत्म होता है, फिर एक धर्म की स्थापना कौन करते हैं? और सब धर्म खलास हो जाते हैं। सबसे ऊपर में है शिवबाबा फिर ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। यह समझानी है ना। उसके लिए ही चित्र बनाये हैं, बाकी सूक्ष्मवतन तो सिर्फ साक्षात्कार के लिए माना जाता है।

3] बाप कहते हैं– यह ज्ञान तुमको अभी देता हूँ फिर प्राय: लोप हो जाता फिर द्वापर से भक्ति शुरू होती है, रावण राज्य आ जाता है। तुम विलायत में भी यह समझा सकते हो कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। लक्ष्मी-नारायण के चित्र से और धर्म वालों का तो कनेक्शन है नहीं इसलिए बाबा कहते हैं यह त्रिमूर्ति और झाड़ हैं मुख्य चित्र। यह बहुत फर्स्ट क्लास हैं। झाड़ और गोले से समझ जायेंगे यह-यह धर्म कब आयेंगे, क्राइस्ट कब आयेगा। आधा में हैं वह सब धर्म, बाकी आधा में हो तुम सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी। 5 हजार वर्ष का खेल है। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। फिर बेहद का वैराग्य होता है। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया खलास हो जानी है। तो इनको भूल जाना है। पतित-पावन कौन है, यह भी सिद्ध करना है।

4] तुमको कहते हैं जहाँ-तहाँ ब्रह्मा को बिठाया है। **यह भी समझाना चाहिए**– अरे, झाड़ ऊपर खडा है। कितना क्लीयर है, यह तो पतित दुनिया के अन्त में खडा है। श्रीकृष्ण को भी ऊपर में दिखाया है। दो बिल्ले लड़ते हैं, मक्खन श्रीकृष्ण खा लेते हैं। माताओं को साक्षात्कार होता है, वह समझती हैं उनके मुख में माखन है अथवा चन्द्रमा है। वास्तव में है विश्व की बादशाही मुख में। दो बिल्ले आपस में लड़ते हैं, माखन तुम देवताओं को मिल जाता है। यह है विश्व की बादशाही रूपी माखन।